हाथ ताली रमे छे वालो, सघलीसूं सनेह।
रंगे रमाडे रासमा, वालो धरी ते जुजवा देह।।७।।

वालाजी हाथ की ताली का खेल सबसे प्रेम से खेलते हैं। बड़ी उमंग और आनन्द के साथ सबको रास खिलाने के लिए जुदा-जुदा तन धारण किए।

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी।
सघली संगे रमिया रंगे, एक पिउ एक नारी।।८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि वालाजी के साथ में यह रामत बहुत ही अच्छी हुई। वालाजी ने रामत में एक-एक गोपी एक-एक श्याम का रूप धारण कर सबके साथ आनन्द से रामतें खेलीं।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ५२४ ।।

राग केदारो–चरचरी

उमंग उदयो साथ, रंगे तो रमवा रास।
रासमां करूं विलास, सखियो सुख लेत री।।१।।

सुन्दरसाथ के मन में रास खेलने की उमंग और बढ़ गई है। रास के बीच में विलास के सुख लेती हैं।

भोमनी किरण भली, आकासे जईने मली।
चांदलो न जाए टली, उजलीसी रेत री।।२।।

वृन्दावन की भूमि के तेज की किरणें आकाश तक जा रही हैं। चन्द्रमा की गति रुक गई है और रेत चमक रही है।

रुत निस नवो सस, दीसे सहु एक रस।
प्रकासियो दसो दिस, न केहेवाय संकेत री।।३।।

मौसम, रात्रि तथा नया चन्द्रमा सब एक ही रस में मग्न हो गए हैं। दसों दिशाओं में इनकी रोशनी फैल रही है। हम तनिक भी इनकी विवेचना नहीं कर सकते।

सूं कहूं वननी जोत, पत्र फूल झलहलोत।
वृंदावन उद्योत, सामग्री समेत री।।४।।

वन की ज्योति के तेज का वर्णन कैसे करूं? पत्ते और फूल भी जगमगा रहे हैं। इस प्रकार वृन्दावन सम्पूर्ण सामग्री सहित जगमगा रहा है।

पसु पंखी अनेक नाम, तेना विचित्र चित्राम।
निरखतां न भाजे हाम, जुजवी जुगत री।।५।।

पशु-पक्षियों के अनेक नाम हैं। इनके रूप चित्र-विचित्र हैं। इनको देखकर चाहना पूर्ण नहीं होती है। सब भांति-भांति युक्ति के हैं।

रमतां भूखण किरण, ब्रह्मांड लाग्यो फिरण।
सखियो उलासी तन, कमल विकसेत री।।६।।

खेलने में आभूषणों की किरणें उठती हैं तो ऐसा लगता है कि योगमाया का ब्रह्माण्ड ही घूम रहा है। सखियों के तन उमंग से भरे हैं जैसे कमल के फूल खिल गए हों।

Nijanand App

एणी पेरे करूं रामत, मनडा थया महामत।
खंत खरी लागी चित, वालाजीसूं हेत री।। ७ ।।

इस प्रकार की रामत से मन मस्ती से भर गया है और वालाजी से प्रेम में खेलने की चाह और बढ़ गई है।

प्रेमना प्रघल पूर, सूरो मांहें अति सूर।
पिए रस मेली अधुर, सघली सुचेत री।। ८ ।।

सखियां प्रेम से भरपूर हैं। बहादुरों में बहादुर हैं। सब सखियां अधर से अधर मिलाकर अमृत रस पीकर सावधान हो गई हैं।

इंद्रावती करे रंग, रामत न करे भंग।
रमती फरती वाला संग, छबके चुमन देत री।। ९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के साथ खेलती हैं, फिरती हैं तथा बड़े शौक के साथ चुम्बन देती हैं, लेकिन खेल फिर भी नहीं रुकता।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ५३३ ॥

राग सिधूडो

ओरो आव वाला आपण घूमडले घूमिए, वाणी विविध पेरे गाऊं।
अनेक रंगे रस उपजावीने, मारा वालैया तूने वालेरी थाऊं।। १ ।।

हे वालाजी! मेरे साथ आओ। हम घूमने (चक्कर लगाने) की रामत खेलें और तरह तरह के गान गाएं। इस प्रकार से अनेक तरह के रस बढ़ाकर वालाजी मैं आपकी प्यारी बन जाऊं।

घोघरे घाटडे स्वर बोलाविए, बीजा अनेक स्वर छे रसाल।
झीण झीणा झीणा झीण झीनेरडा, मीठा मधुरा वली रसाल।। २ ।।

मीठे स्वर से गाएंगे। स्वर बदलेंगे। पहले धीमा, फिर चढ़ता, चढ़ता, चढ़ता, चढ़ता और चढ़ता, मीठी रस भरी वाणी में गाएंगे (जैसे-जैसे खेल तेज होता जाएगा, वैसे-वैसे आवाज भी बढ़ती जाएगी।)

घूमडलो घूमवानो रे वालैया, मूने छे अति घणो कोड।
साम सामा आपण थईने घूमिए, मारा वालैया आपण बांधीने होड।। ३ ।।

हे वालाजी! मुझे घूमडलो घूमने (चक्कर खाते हुए) का बहुत उल्लास है। हे वालाजी! हम आमने-सामने आकर शर्त लगाकर घूमें।

ए रामत अमे रब्दीने रमसूं, साथ सकल तमे रेहेजो रे जोई।
हूं हारूं तो मोपर हंसजो, मारो वालोजी हारे तो हंसजो मा कोई।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह रामत हम शर्त लगाकर खेलेंगे। हे सखियो! तुम खड़ी-खड़ी देखना। मैं हार जाऊं तो मुझ पर हंसना। यदि वालाजी हार जाएं तो हंसना नहीं।

घूमडलो वालो मोसूं घूमे छे, वचन मीठडा रे गाय।
अंग वस्तर भूखण मीठडां लागे, वचे वचे कंठडे रे वलाय।। ५ ।।

वालाजी घूमडला मेरे साथ घूमते हैं। मीठे वचन गाते हैं, उनके अंग के वस्त्र-आभूषण अच्छे लगते हैं। बीच-बीच में गले से लिपटना भी अच्छा लगता है।

Nijanand App